License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

2 इतिहास 1:1–9:31

2 इतिहास, 1 इतिहास में दर्ज इस्राएल की कहानी को जारी रखता है।

सुलैमान दाऊद के बाद राजा बन गई।

2 इतिहास में सुलैमान की कहानियाँ केवल उसकी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के बारे में बताती हैं। वे उन समयों का वर्णन नहीं करतीं जब वह अविश्वासी था और झूठे देवताओं की पूजा करता था। वे कहानियाँ 2 राजाओं में दर्ज हैं।

2 इतिहास दिखाता है कि सुलैमान ने कैसे दाऊद के उदाहरण का अनुसरण किया। उन्होंने याजकों और लेवियों के कार्य के बारे में दाऊद के निर्देशों का पालन किया। और उन्होंने मोरिय्याह पर्वत पर मन्दिर बनाने के बारे में दाऊद के निर्देशों का पालन किया।

सुलैमान ने पहचाना कि मन्दिर एक इमारत से अधिक कुछ नहीं था। यह एक स्थान था जहाँ इस्राएली परमेश्वर को बलिदान चढ़ा सकते थे। परमेश्वर इतने महान हैं कि पृथ्वी या स्वर्ग में कोई भी स्थान उन्हें धारण नहीं कर सकता। फिर भी मन्दिर वह स्थान था जहां परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिए चुना। परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण के अध्याय 12 से 14 में अपने नाम के लिए एक विशेष स्थान के बारे में बात की थी। परमेश्वर का अपना नाम कहीं रखना एक संकेत था। यह एक संकेत था कि लोग उनकी उपस्थिति को एक विशेष तरीके से महसूस कर सकते थे।

सुलैमान ने इस्राएलियों को यह दिखाया कि कैसे परमेश्वर से प्रार्थना (प्रार्थना) करनी चाहिए। उन्होंने प्रार्थना करते समय अपने शरीर और अपने शब्दों का उपयोग किया। सुलैमान अपने घुटनों पर थे और अपने हाथ स्वर्ग की ओर उठाए हुए थे। इस प्रकार उन्होंने दिखाया कि वे विनम्र हैं और परमेश्वर की उपासना करते हैं। इससे यह भी प्रकट हुआ कि उन्हें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है और वे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वे उन्हें उत्तर देंगे। सुलैमान समझ गए थे कि परमेश्वर जानते है कि उनके हृदय में क्या है। परमेश्वर ने स्वर्ग से वेदी पर आग भेजकर उत्तर दिया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि परमेश्वर ने सुलैमान की प्रार्थना पर ध्यान दिया। परमेश्वर ने वादा किया कि उनका नाम, उनकी आंखें और उनका हृदय सदैव मन्दिर में रहेंगे। इसका अर्थ था कि वे सदैव अपने लोगों की सुनेंगे और उनकी सहायता करेंगे। वे ऐसा तब करेंगे जब वे विनम्र होंगे और प्रार्थना करेंगे। परमेश्वर ऐसा तब करेंगे जब वे दुष्टता से दूर होकर उन पर निर्भर रहेंगे। जब लोगों ने आग देखी, तो उन्होंने परमेश्वर की आराधना की और उनका धन्यवाद किया। वे समझ गए कि आग उनके प्रति परमेश्वर के विश्वासयोग्य प्रेम का संकेत थी। यहाँ तक कि शेबा की रानी जैसे बाहरी व्यक्ति ने भी यह पहचाना कि परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करते हैं। परमेश्वर अपने लोगों (परमेश्वर के लोग) की अच्छी देखभाल करना चाहते थे। उन्होंने यह योजना बनाई थी कि यह दाऊद के वंश के बुद्धिमान राजाओं के माध्यम से होगा। यह परमेश्वर की दाऊद के साथ वाचा का हिस्सा था। राजाओं को परमेश्वर की विश्वासपूर्वक आराधना करनी थी और जो उचित और सही है, वह करना था।

2 इतिहास 10:1–12:16

1 इतिहास उत्तरी राज्य के राजाओं के बारे में नहीं बताता। उनका उल्लेख केवल उन्हीं घटनाओं में किया गया है जो दक्षिणी राज्य से सम्बन्धित हैं। इसका कारण यह है कि उत्तरी राज्य ने दाऊद के राजवंश का अनुसरण करने से इनकार कर दिया। और उन्होंने सीनै पर्वत की वाचा में एकमात्र परमेश्वर की आराधना करने के नियमों का पालन नहीं किया।

कई याजक और लेवी उत्तरी राज्य को छोड़कर चले गए। वे इसलिए चले गए क्योंकि वे परमेश्वर की सेवा वैसे नहीं कर सकते थे जैसे उन्हें करनी चाहिए थी। यारोबाम उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देते थे। ये याजक और लेवी दक्षिणी राज्य में चले गए। वहां उन्हें वह कार्य करने की अनुमति मिली जिसके लिए उन्हें अलग किया गया था।

उत्तरी राज्य के अन्य गोत्रों के इस्राएली भी यहूदा में आ गए। वे इसलिए आए ताकि वे पूरे दिल से परमेश्वर की आराधना कर सकें। कुछ समय तक दक्षिणी राज्य के लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहे। लेकिन रहबाम ने दाऊद के उदाहरण का अनुसरण करना बंद कर दिया। फिर यहूदा के लोगों ने रहबाम के परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य न रहने के उदाहरण का अनुसरण किया।

जब दक्षिणी राज्य के राजा परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हो गए, तो उन्होंने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से संदेश भेजे। कभी-कभी राजा भविष्यवक्ताओं की बात सुनते थे। रहबाम और इस्राएल के अगुवों ने भविष्यवक्ता शमायाह की चेतावनियों को सुना। उन्होंने फिर से परमेश्वर के सामने खुद को नम्र किया। वे मिस्र के राजा द्वारा नष्ट नहीं किए गए। लेकिन उन्हें मिस्र के राजा की अपने स्वामी के रूप में सेवा करनी पड़ी। यह वाचा के श्रापों में से एक था। यह दक्षिणी राज्य के साथ हुआ क्योंकि रहबाम ने पूरे दिल से परमेश्वर की आराधना करना बंद कर दिया था।

2 इतिहास 13:1–14:1

2 इतिहास में अबिय्याह की एक कहानी दर्ज है जो 2 राजाओं में शामिल नहीं थी। यह कहानी उस समय का वर्णन करती है जब अबिय्याह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे।

अबिय्याह यारोबाम और उत्तरी राज्य की सेना के खिलाफ लड़ना नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि उत्तरी राज्य फिर से दक्षिणी राज्य के साथ मिल जाए। वे चाहते थे कि वे फिर से एक राष्ट्र बनें जिसमें केवल एक राजा हो। वह राजा दाऊद के परिवार की वंशावली से होगा। वे चाहते थे कि इस्राएल के सभी 12 गोत्र केवल परमेश्वर की आराधना करें। वे सभी सीनै पर्वत की वाचा में परमेश्वर की आराधना के बारे में दी गई व्यवस्था का पालन करें।

अबिय्याह ने यारोबाम और उसकी सेना से इन सब बातों के बारे में बात की। उत्तरी राज्य दक्षिणी राज्य का विरोध कर रहा था। अबिय्याह ने समझाया कि इसका मतलब है कि उत्तरी राज्य परमेश्वर के खिलाफ लड़ रहा था। इसका कारण यह था कि दक्षिणी राज्य परमेश्वर की विश्वासपूर्वक आराधना करता था।

जब युद्ध शुरू हुआ और अबिय्याह की सेना ने परमेश्वर को पुकारा, तो परमेश्वर ने कार्य किया। उन्होंने अबिय्याह की सेना को यारोबाम की सेना से बचाया। परमेश्वर ने उन्हें बचाया, भले ही यारोबाम की सेना बहुत बड़ी थी।

2 इतिहास 14:2–16:14

कई वर्षों तक आसा ने परमेश्वर की प्रजा की अगुवाई वैसे की जैसा कि राजाओं को करनी चाहिए थी। राजाओं के बारे में नियम व्यवस्थाविवरण 17:14–20 में दर्ज थे।

आसा ने दक्षिणी राज्य की अगुवाई एकमात्र परमेश्वर की आराधना करने और मूसा की व्यवस्था का पालन करने में की। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया कि जब दक्षिणी राज्य पर हमला हो, तो परमेश्वर उन्हें बचाएंगे। उन्होंने भविष्यवक्ता अजर्याह की बात सुनी और उनके संदेश का पालन किया। आसा ने लोगों को परमेश्वर के साथ उनकी वाचा के प्रति फिर से विश्वासयोग्य होने के लिए प्रतिबद्ध किया।

लेकिन जब वह बड़े हो गए, तो उन्होंने वैसे अगुवाई करना बंद कर दिया जैसे राजाओं को करनी चाहिए। आसा ने दक्षिणी राज्य को बाशा और उत्तरी राज्य से बचाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया। उन्होंने भविष्यवक्ता हनानी को बंदीगृह में डाल दिया क्योंकि उन्होंने उनके खिलाफ परमेश्वर के संदेश बोले। आसा ने परमेश्वर के लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। जब उन्हें पाँवों में समस्या हुई, तो उन्होंने परमेश्वर से मदद नहीं मांगी।

इन कारणों से, दक्षिणी राज्य के पास शांति और विश्राम नहीं था। वे हमेशा युद्ध में रहते थे। इस प्रकार परमेश्वर आसा के पापों के लिए न्याय लाए।

2 इतिहास 17:1–21:3

यहोशापात ने अपने पूरे शासनकाल में राजा के रूप में दाऊद के उदाहरण का अनुसरण किया। उन्होंने केवल परमेश्वर की आराधना की और सीनै पर्वत की वाचा का पालन किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि जिन पर वे शासन करते थे, उन्हें मूसा की व्यवस्था सिखाई जाए।

उन्होंने पूरे दक्षिणी राज्य में न्यायियों को नियुक्त किया। न्यायियों ने लोगों को व्यवस्था को लागू करने का तरीका समझने में मदद की। उन्होंने कठिन मामलों का निर्णय निष्पक्षता और बुद्धिमानी से किया।

यहोशापात ने उन सभी चीजों को हटा दिया जो झूठे देवताओं की पूजाओं से सम्बन्धित थीं। ये वे चीजें थीं जो हर राजा को करनी चाहिए थीं। इन चीजों ने परमेश्वर की प्रजा को याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में जीने में मदद की।

जब मोआबियों, अम्मोनियों और एदोम के लोग आक्रमण करने वाले थे, तब यहोशापात ने बुद्धिमानी से काम लिया। उन्होंने दक्षिणी राज्य के लोगों को परमेश्वर से सहायता मांगने के लिए प्रेरित किया। सभी ने मिलकर बिना भोजन किए समय बिताया। इसे उपवास कहा जाता है। यह दिखाता है कि वे परमेश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना करने में कितने गंभीर थे।

यह इस्राएल में राजाओं के शासन से पहले लोगों के निर्णय लेने के तरीके से बहुत अलग था। 12 न्यायियों के समय में, लोग वही करते थे जो उन्हें सही लगता था (न्यायियों 21:25)। यहोशापात उस प्रकार के राजा थे जिनकी आवश्यकता न्यायियों की पुस्तक में दिखाई गई थी।

यहोशापात की प्रार्थना ने दिखाया कि वह विनम्र थे। उन्होंने उन पर हमला करने वालों के खिलाफ न्याय लाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना का उत्तर एक लेवी के माध्यम से दिया जो आसाप के वंश से था। संदेश ने लोगों को आशा रखने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि परमेश्वर उनके साथ थे। जब लोगों ने संदेश सुना, तो उन्होंने परमेश्वर की आराधना और स्तुति की। इसी तरह वे युद्ध में गए। परमेश्वर की स्तुति गाते हुए लोग सैनिकों के आगे चले। उन्हें लड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि परमेश्वर ने अन्य सेनाओं को एक-दूसरे को नष्ट करने के लिए प्रेरित किया।

दक्षिणी राज्य के चारों ओर की जातियों ने यहोशापात के लोगों के जीवन को देखा। उन्होंने देखा कि कैसे परमेश्वर ने दक्षिणी राज्य की रक्षा की। जो उन्होंने देखा, उससे अन्य राष्ट्र यहोवा से डरने लगे। इसका मतलब था कि वे परमेश्वर का सम्मान करते थे और उनके लोगों पर हमला नहीं करते थे। इस प्रकार दक्षिणी राज्य ने शांति और विश्राम की वाचा की आशीषों का आनंद लिया।

जब यहोशापात ने मूर्खतापूर्ण कार्य किए, तो भविष्यवक्ताओं ने उनके विरुद्ध बोला। उन्होंने उनकी बात सुनी और उन्हें

दंडित नहीं किया। यह तब हुआ जब यहोशापात ने अहाब की बेटी से विवाह किया और अहाब के साथ युद्ध में शामिल हुए। यह तब भी हुआ जब यहोशापात ने उत्तरी राज्य के साथ व्यापार के बारे में एक समझौता किया।

2 इतिहास 21:4–24:27

न तो यहोराम और न ही अहज्याह ने दक्षिणी राज्य की अगुवाई वैसे की जैसे राजाओं को करनी चाहिए थी। एलिय्याह का यहोराम को पत्र कुछ स्पष्ट कर देता है। परमेश्वर उन राजाओं के विरुद्ध न्याय लाते हैं जो परमेश्वर की आराधना नहीं करते और मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करते।

फिर भी परमेश्वर ने वादा किया था कि वे दाऊद के राज्य के दीपक को उज्ज्वल बनाए रखेंगे। इसका मतलब था कि परमेश्वर नहीं चाहते थे कि दाऊद के परिवार की वंशावली नष्ट हो जाए। वे चाहते थे कि दाऊद के परिवार की वंशावली से एक पुत्र सदा के लिए राजा के रूप में शासन करे। परमेश्वर ने अतल्याह को दाऊद के परिवार की वंशावली के उन सभी को मारने की अनुमति नहीं दी जो राजा हो सकते थे।

परमेश्वर ने यहोशावत और यहोयादा का उपयोग योआश को बचाने के लिए किया। यहोयादा ने सुनिश्चित किया कि मूसा की व्यवस्था का पालन किया जाए। उन्होंने सुनिश्चित किया कि लेवी मन्दिर में अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाएँ। उन्होंने उन ज़िम्मेदारियों को उसी प्रकार निभाया जैसा कि दाऊद ने नियुक्त किया था।

जब दाऊद राजा थे, अगुवों ने मन्दिर के निर्माण के लिए बहुत उदारता से दिया था। योआश के समय, अधिकारी और लोग धन लाए और उसे उदारता से दिया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि मन्दिर की मरम्मत हो सके। राजा, लोग, याजक और लेवी एक बार फिर मन्दिर में परमेश्वर की आराधना करने लगे।

लेकिन जब वह बड़े हुए, तो योआश ने मन्दिर में परमेश्वर की आराधना करना बंद कर दिया। उन्होंने समझदार सलाहकारों और परमेश्वर के संदेशों को सुनना भी बंद कर दिया। उन्होंने यहोयादा के पुत्र जकर्याह की हत्या करवा दी और इस पाप के लिए ज़िम्मेदार ठहराए गए। अराम की एक बहुत छोटी सेना ने यहूदा और यरूशलेम को बहुत नुकसान पहुंचाया। परमेश्वर ने योआश के खिलाफ न्याय के रूप में ऐसा होने दिया।

2 इतिहास 25:1–28:27

अमस्याह ने उत्तरी राज्य से सैनिकों को नियुक्त किया। फिर एक नबी ने उनसे कहा कि वे उन सैनिकों का उपयोग न करें। परमेश्वर चाहते थे कि राजा युद्ध करते समय उन पर निर्भर रहें। उनकी सफलता उनकी सेना के आकार पर निर्भर नहीं करती थी। अमस्याह ने नबी की बात सुनी और उनके संदेश का पालन किया।

बाद में, परमेश्वर ने अमस्याह के पास एक और नबी को भेजा। उस नबी ने अमस्याह के खिलाफ बोला क्योंकि वह झूठे देवताओं की उपासना कर रहे थे। अमस्याह उस नबी की सलाह नहीं चाहते थे। इसके बजाय, अमस्याह ने उन सलाहकारों की बात सुनी जिन्हें उन्होंने चुना था। उनके साथ मिलकर उन्होंने उत्तरी राज्य पर हमला करने का मूर्खतापूर्ण निर्णय लिया। परमेश्वर ने अमस्याह के खिलाफ न्याय किया और उत्तरी राज्य को युद्ध जीतने की अनुमति दी।

अमस्याह के पुत्र उज्जियाह ने परमेश्वर की आराधना की और उनका विश्वासयोग्यता से पालन किया। लेकिन फिर वह अहंकार से भर गए। उन्होंने राजाओं और याजकों के बीच के अन्तर का सम्मान नहीं किया। उन्होंने मन्दिर में वेदी पर धूप जलाने की कोशिश की। कई साल पहले, कोरह और उनके अनुयायियों ने परमेश्वर को धूप चढ़ाने की कोशिश की थी (गिनती 16)। परमेश्वर ने यह बहुत स्पष्ट कर दिया था कि केवल याजकों को ही ऐसा करना चाहिए।

उज्जियाह के पुत्र योताम ने पूरे दिल से परमेश्वर का अनुसरण किया। लेकिन योताम के पुत्र आहाज ने परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया। वह बिल्कुल भी दाऊद के समान नहीं थे। उन्होंने लोगों को झूठे देवताओं की पूजा करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने उन देवताओं के लिए बच्चों की बलि दी। आहाज ने अपने पाप से मुंह नहीं मोड़ा। उन्होंने दक्षिणी राज्य पर सेनाओं के आक्रमण के समय भी पश्चाताप नहीं किया। आहाज ने परमेश्वर से सहायता मांगने के बजाय अश्शूर के राजा से सहायता प्राप्त करने की कोशिश की। फिर आहाज ने मन्दिर के दरवाजे बंद कर दिए। इसका मतलब यह है कि उन्होंने सच्चे परमेश्वर की आराधना के लिए समुदाय की प्रथाओं को पूरी तरह से रोक दिया।

2 इतिहास 29:1–32:33

जैसे ही उन्होंने शासन करना शुरू किया, हिजकिय्याह ने मन्दिर के द्वार खोल दिए। यह उन सभी कार्यों का संकेत था जो उन्होंने परमेश्वर की प्रजा को परमेश्वर की सच्ची आराधना करने में मदद करने के लिए किए।

हिजकिय्याह ने लोगों को फिर से सीनै पर्वत की वाचा के अनुसार परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार इस्राएली परमेश्वर की आराधना करते थे जब दाऊद और सुलैमान राजा थे। हिजकिय्याह ने यहूदा में कई बदलाव किए ताकि यह हो सके। इन बदलावों में याजकों और लेवियों को फिर से उनका काम करने के लिए प्रेरित करना शामिल था। प्रत्येक याजक और लेवी समूह को उनके काम ठहराए गए थे जब दाऊद राजा थे।

परिवर्तनों में आराधना में उपयोग किए जाने वाले सभी स्थानों और वस्तुओं को स्वच्छ और पवित्र बनाना शामिल था। परिवर्तनों में राजा और लोगों द्वारा उनके पास जो कुछ भी था उसका दसवां हिस्सा देना शामिल था। उन्होंने इसे स्वतंत्र रूप

से दिया ताकि याजकों और लेवियों की देखभाल हो सके। इससे लेवी और याजक अपना समय आराधना की अगुवाई करने और लोगों को शिक्षा देने में व्यतीत कर सके।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से आराधना में पर्वों को उसी प्रकार मनाना शामिल था जैसा मूसा ने इस्राएलियों को सिखाया था। लोगों ने प्रायश्चित का दिन मनाया। यह वह दिन है जब पापों का प्रायश्चित किया जाता था।

हिजकिय्याह चाहते थे कि इस्राएल के सभी 12 गौत्र फिर से एकसाथ फसह का पर्व मनाएँ। ऐसा सुलैमान के राजा होने के बाद से नहीं हुआ था। हिजकिय्याह ने उत्तरी राज्य में बचे हुए सभी इस्राएलियों को आमंत्रित किया। ये लोग पीछे रह गए थे जब अश्शूर की सेना ने उत्तरी राज्य पर नियंत्रण कर लिया था। उन्हें अश्शूर में बन्धुआई में रहने के लिए मजबूर नहीं किया गया था।

कुछ गौत्रों के कुछ लोग पर्व के लिए यरूशलेम गए। उनके बीच रहने वाले कुछ बाहरी लोग भी गए। यहां तक कि जो लोग स्वयं को शुद्ध और पवित्र नहीं बना पाए थे, वे भी पर्व का हिस्सा बन सकते थे। इसका कारण यह था कि वे पूरे दिल से परमेश्वर की आराधना करना चाहते थे। हिजकिय्याह की प्रार्थना से यह स्पष्ट हुआ कि वे परमेश्वर के बारे में कुछ समझते थे। परमेश्वर इस बात की गहराई से परवाह करते हैं कि लोग अपने दिल में उनके प्रति समर्पित हों। परमेश्वर ने लोगों के पापों को क्षमा किया और उन्हें चंगा किया।

कई साल पहले परमेश्वर ने सुलैमान से वादा किया था कि वे ऐसा करेंगे। वे अपने लोगों को क्षमा करेंगे और उनके देश को चंगा करेंगे। वे ऐसा तब करेंगे जब वे बुराई से मुड़ेंगे। वे ऐसा तब करेंगे जब वे विनम्र होकर उनसे प्रार्थना करेंगे (2 इतिहास 7:14)।

2 इतिहास 33:1–36:4

2 इतिहास में मनश्शे की एक कहानी दर्ज है जो 2 राजाओं में शामिल नहीं थी। उन्होंने परमेश्वर के सामने स्वयं को नम्र किया और उनसे सहायता के लिए प्रार्थना की। उन्होंने यह तब किया जब परमेश्वर उनके बुरे कामों के लिए उनके विरुद्ध न्याय लाए। परमेश्वर ने अश्शूर की सेना को मनश्शे को बाबुल में बंदी बनाने की अनुमति दी।

मनश्शे ने अपने बुरे मार्गों से तब मुंह मोड़ा जब परमेश्वर ने उन्हें दण्डित किया और सुधारा। क्योंकि मनश्शे ने पश्चाताप किया, परमेश्वर ने उन्हें यरूशलेम लौटने की अनुमति दी। जब उन्होंने फिर से राजा के रूप में शासन किया, तो उन्होंने लोगों को एकमात्र परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अब वे बुरे काम नहीं किए जो पहले किए थे। फिर भी उनके पुत्र आमोन ने उन बुरे उदाहरणों का अनुसरण किया जो मनश्शे ने कई वर्षों तक स्थापित किए थे। उन्होंने मनश्शे के पश्चाताप और विनम्र होने के उदाहरण का अनुसरण नहीं किया।

योशिय्याह दाऊद, सुलैमान और हिजकिय्याह की तरह एक राजा थे। उन्होंने उन सभी वस्तुओं को हटा दिया जो झूठे देवताओं की पूजा के लिए उपयोग की जाती थीं। उन्होंने यह दक्षिणी राज्य में किया। उन्होंने यह उस भूमि में भी किया जहाँ उत्तरी राज्य था। अश्शूर उस भूमि को नियंत्रित करते थे। लेकिन जो भी इस्राएली वहाँ रहते थे, उन्हें सच्चे परमेश्वर की आराधना करने की अनुमति थी। वहाँ रहने वाले बाहरी लोगों को भी यह अनुमति थी।

योशिय्याह ने मन्दिर की मरम्मत करवाई। उन्होंने सुनिश्चित किया कि लोगों को व्यवस्था की पुस्तक पढ़कर सुनाई जाए। यह मूसा की व्यवस्था की एक प्रति थी। उन्होंने सीने पर्वत की वाचा के बारे में पढ़ते समय वाचा के श्रापों के बारे में सीखा। उन्होंने आशा की कि वाचा के श्राप न आएं। इसलिए जब वे राजा थे, तब इस्राएल के सभी 12 गोत्र परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते थे। दक्षिणी राज्य में और उत्तरी राज्य में बचे हुए लोग परमेश्वर का विश्वासयोग्यता से अनुसरण करते थे।

जब वह बड़े हुए, योशिय्याह ने मिस्र की सेना से लड़ने का एक मूर्खतापूर्ण निर्णय लिया। इससे उनकी मृत्यु हो गई। इससे मिस्र ने दक्षिणी राज्य के शासन पर नियंत्रण भी कर लिया। मिस्र के राजा ने उनके अगले राजा को चुना।

2 इतिहास 36:5–23

योशिय्याह के बाद के राजाओं ने परमेश्वर की आज्ञा मानने और केवल उनकी आराधना करने के उनके उदाहरण का पालन नहीं किया। यहोयाकीम और यहोयाकीन ने न तो पश्चाताप किया और न ही स्वयं को नम्र बनाया। उन्होंने ऐसा तब भी नहीं किया जब उन्हें बंदी बनाकर बाबुल ले जाया गया।

सिदकिय्याह ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह से परमेश्वर के संदेशों को सुनने से इनकार कर दिया। परमेश्वर अपने लोगों के प्रति बहुत धैर्यवान रहे हैं। उन्होंने बार-बार दया और करूणा दिखाई है। जब भी उन्होंने स्वयं को नम्र किया और उनसे प्रार्थना की, उन्होंने उन्हें क्षमा किया।

लेकिन वे बुरे आचरणों का पालन करने और झूठे देवताओं की पूजा करने के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने एक याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में जीने से इनकार कर दिया। उन्होंने उन नबियों की बात सुनने से इनकार कर दिया जिन्हें परमेश्वर ने उनके पास भेजा था। उन्होंने परमेश्वर की भूमि के शासक होने के लिए परमेश्वर के उदाहरण का अनुसरण करने से इनकार कर दिया।। उन्होंने सब्त के वर्षों के दौरान भूमि को विश्राम करने की अनुमति नहीं दी। भूमि के विश्राम के बारे में परमेश्वर के निर्देश लैव्यव्यवस्था 25:1–12 में दर्ज हैं।

इसलिए परमेश्वर ने अब दक्षिणी राज्य पर आने वाले वाचा के श्रापों को रोकना बंद कर दिया। बाबुल की सेना ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया और दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण कर लिया। उन्होंने दक्षिणी राज्य के कई लोगों को बाबुल में बंधुआई में

2 **इतिहास** *36:5–23*

रहने के लिए मजबूर किया। जब लोग दूर थे, तब दक्षिणी राज्य के खेतों की खेती नहीं की गई। इस प्रकार परमेश्वर ने भूमि को आवश्यक विश्राम प्रदान किया।

कई वर्षों के बाद, कुस्रू ने लोगों को यरूशलेम लौटने की अनुमति दी। वे चाहते थे कि वे प्रभु के लिए एक और मन्दिर बनाएं। इससे यरूशलेम लौटने वाले यहूदियों के लिए कुछ स्पष्ट हो गया। परमेश्वर अब भी चाहते थे कि वे सीनै पर्वत की वाचा के अनुसार उनकी आराधना करें। वे अब भी चाहते थे कि वे उनके लोग बनें। वे अब भी उनके परमेश्वर बनना चाहते थे।